

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

14-जून-2014 19:21 IST

नेवी को आईएनएस विक्रमादित्य समर्पित किए जाने के दौरान प्रधानमंत्री जी का भाषण का मूल पाठ

अपनी इस महान भारत भूमि की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले सभी प्यारे साथियों!

प्रधानमंत्री बनने के बाद मैं पहली बार दिल्ली के बाहर निकला और सीधा आप लोगों के पास पहुँचा हूँ। इससे आप अंदाज कर सकते हैं कि नई सरकार की priority क्या है?

यह देश विकास की नई ऊँचाइयों को पार करे, यहाँ का गरीब से गरीब व्यक्ति सुख और शांति की जिंदगी प्राप्त करे, इसके लिए भारत सुरक्षित होना सबसे पहली शर्त होती ही है और सुरक्षित भारत के लिए सबसे बड़ी ताकत होती है, चाहे वो नौसेना हो, थल सेना हो या वायुसेना हो, हमारे जवानों का सामर्थ्य, उनका त्याग, उनकी तपस्या का ,भारत के सवा सौ करोड़ नागरिकों को चैन की नींद से सोने की गारंटी देते हैं, उसके साथ जुड़ा हुआ होता है। आज सेनाओं के रंगरूप बदल चुके हैं। आधुनिक Technology को सुरक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ा अहम एक हिस्सा बन चुके हैं इसलिए जितना महत्व समर्पित, प्रतिभित, साहसिक प्राणों का है, उतना ही महत्व आधुनिक से आधुनिक Technology से, सशस्त्रों से देश सुसज्ज होने चाहिए। यहाँ आज भारत की पूरी सुरक्षा इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है और नौसेना के माध्यम से यह आज वह स्वर्णिम पृष्ठ अंकित हो रहा है।

विक्रमादित्य आज से नौसेना के जवानों को समर्पित किया जा रहा है। भारत की सुरक्षा में एक नया कदम, मजबूत कदम आज अंकित हो रहा है। देश के सामान्य नागरिक को विक्रमादित्य के आने से क्या होता है उसका ये काम नहीं है लेकिन जिसने अपना जीवन माँ भारत के लिए आहूत करने का संकल्प किया है। उस नौसेना के जवानों के लिए विक्रमादित्य क्या ताकत है? वह भली-भाँति वो जानता है समझता है। मेरे लिए यह अत्यंत गर्व और खुशी का अवसर है कि आज भारत की नौसेना में विक्रमादित्य का जुड़ना, उस ऐतिहासिक पल पर आप सबके बीच आकर के उसके सामर्थ्य को समझना, उसकी ताकत को पहचानना और भारत के साहस के लिए गर्व करना।

नौसेना ने अनेक क्षेत्रों में रूतबे हासिल किए हैं। पूरे मानवता के इतिहास में, नौसेना की कल्पना सबसे पहले छत्रपति शिवाजी महाराज ने की और उसका मूल संबंध युद्ध से कम था। विश्व व्यापार के लिए जाने वाले जहाजों की रक्षा और छत्रपति शिवाजी महाराज का सपना था कि भारत विश्व व्यापार के क्षेत्र में एक ताकत बनकर उभरना है, तो हमारे व्यापारिक क्षेत्र के लोगों के लिए सुरक्षा का प्रबंध होना चाहिए और उसी में से सदियों पहले नौसेना का प्रारंभ हुआ। आज सुरक्षा के क्षेत्र में समुद्र से सटे हुए सभी देशों के लिए नौसेना का महात्म्य बहुत बढ़ गया है। आधुनिक विज्ञान और Technology की स्पर्धा भी उतनी महत्वपूर्ण बन गई है। तब नौसेना ने Technology के क्षेत्र में Indigenous भारत के अपने वैज्ञानिकों द्वारा भारत के नौसेना के जवानों के अनुभव के द्वारा धीरे-धीरे Indigenous युद्ध के सामरिक क्षेत्र में हमने प्रवेश किया है बहुत निकट भविष्य में हम उसमें और आगे बढ़ाना चाह रहे हैं।

भारत जैसा देश आजादी के इतने वर्षों के बाद सुरक्षा के लिए विदेशों से इन साधनों का Import करे इससे हमें बहुत जल्द बाहर आना है। भारत Self-sufficiently defence offset के निर्माण के क्षेत्र में भारत आगे बढ़े और विश्व के छोटे-छोटे देशों के लिए भारत द्वारा उत्पादित सुरक्षा के साधन एक संघ बने। उनको विश्वास हो जाए हाँ, मेरे पास भारत के युवकों द्वारा बनाया हुआ Defence Equipment है। मैं दुनिया से कभी हार नहीं मानूँगा यह विश्वास विश्व के छोटे-छोटे देशों में भी पैदा रहने का सपना ले करके उस दिशा में आगे बढ़ना जानते हैं। भारत के नौजवानों के Talent, Innovation, Research ,Technological Up-gradation सुविधा के हर प्रकार की ताकत और साथ-साथ हमारी तिमिरशक्ति जितनी सामर्थ्यवान होगी दुनिया की कोई ताकत कभी भी भारत की तरफ आँख उठा कर नहीं देख सकती। राष्ट्र की रक्षा के लिए जितना महत्व है, भिन्न-भिन्न सेना के जवानों के साथ जुड़ा हुआ है उतना ही देश के नेतृत्व का मिज़ाज़ भी बड़ा महत्व रखता है। भारत किसी को भी आँख दिखाने के पक्ष में नहीं है और न ही भारत अब आँख झुका करके जीने के लिए तैयार है। हम दुनिया की कितनी ही ताकत क्यों न हो, भारत आँख मिला करके आगे बढ़ने का पक्षकार है और इसमें आँख दिखाने के हमारे सपने नहीं हैं। आँख झुकाने की हमारी तैयारी नहीं है लेकिन विश्व के साथ आँख से आँख मिला करके बात करने का सामर्थ्य भारत की सरकार में है। इसका मूल कारण ये सामर्थ्यवान हमारे सेना के जवान हैं उनकी तैयारी है

और वही ताकत देती हैं।

मैं आज भारत की सुरक्षा के क्षेत्र में इतना बड़ा, मैं देख रहा था घंटों से मैं कभी ऊपर, कभी नीचे, कभी दाएं, कभी बाएं पूरे इस जहाज को देख रहा हूँ। मुझे बताया गया है कि एक साथ 1600 से भी अधिक जवान इस पर तैनात हैं। इसी पर से हमारे हवाई जहाज आने-जाने का कारोबार समुद्र के भीतर से कर पा रहे हैं। ये अपने आप में हमारे सामरिक सामर्थ्य में एक नया, एक नई भेंट आज प्राप्त हो रही है। मैं देश के नौसेना के जवानों को मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

समुद्र के अंदर जितनी तैयारी लगती है उससे भी ज्यादा तैयारी समुद्र के तट पर लगती है। वहाँ के नागरिकों का प्रशिक्षण, नागरिकों की सत्ता नौ सेना को मदद करने वाली वहाँ पर टोलियाँ ये उतना ही महत्व रखती हैं। समुद्री तट के सभी तहसीलों में Naval NCC उसका Network बने। Naval NCC के माध्यम से देशभक्त नौजवानों की वहाँ एक अगर फोर्स तैयार होती है तो नौसेना के लिए, पीछे रह करके जानकारियाँ देना, मदद करना एक बहुत बड़ी ताकत उभर सकती है, आने वाले दिनों में, उस पर भी हम बल देना चाहते हैं। मैं फिर एक बार सेना के जवानों को, नौसेना के जवानों को, वायु सेना के जवानों को आज इस पवित्र अवसर पर बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

इस नई सरकार ने जो महत्वपूर्ण निर्णय किए हैं। कई वर्षों से देश के जवानों की एक मन की इच्छा रही है, पता नहीं वो शुभ काम हमारे पूर्व के लोगों ने क्यों नहीं किया? हो सकता है कोई अच्छे और पवित्र कार्य करने का मेरा ही सौभाग्य लिखा हुआ है और इसलिए एक राष्ट्रीय स्तर का war memorial बनाने का इस नई सरकार ने फैसला किया है और देश आजाद होने के बाद देश के लिए मर मिटने वाले सभी इन शहीदों का आने वाली सदियों तक पुनःस्मरण रहे, वैसा एक कदम उठाने का हमने निर्णय किया है। one rank one pension बहुत बड़ी लम्बी लड़ाई चली है, कई उतार-चढ़ाव आए हैं उसमें, वायदे बहुत हुए लेकिन इरादे नजर नहीं आए थे। यह सरकार सिर्फ वायदे नहीं, इरादे लेकर के आई है और one rank one pension उस योजना को लागू करने के लिए हम प्रतिबद्ध है, फिर एक बार मैं नौसेना के सभी जवानों को आज विक्रमादित्य, जिसके नाम के साथ सूर्य जैसी तेजस्विता जुड़ी है, जिसके नाम के साथ अनेक नए युद्ध क्रम को अर्जित करने की प्रेरणा बनी हुई है। आप सब के जीवन में भी सूर्य की वो प्रखरता आए, विजयी होने का विश्वास पैदा हो और नए विक्रम प्राप्त करने की सामर्थ्य पैदा हो, यही मेरी आप सबके लिए शुभकामना है। मेरे साथ बोलिए-

भारत माता की, जय। भारत माता की, जय। भारत माता की, जय ।।

धीरज सिंह/नवनीत कौर/अनिल कुमार

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

04-जुलाई-2014 14:30 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के बादामी बाग छावनी, श्रीनगर के जवानों को संबोधन का मूल पाठ

मंच पर विराजमान सभी वरिष्ठ महनुभाव, और भारत माता की सेवा के लिए अपने आप को समर्पित करने वाले सभी वीर बहादुर जवानों,

ये बड़ा सौभाग्य है की आज मातृभूमि के लिए जीवन अर्पण करने वाले वीर शहीदों को नमन करने का मुझे अवसर मिला। मुझे विश्वास है कि भारत माँ की सेवा करने वाले इन वीर शहीदों को स्मरण करते हुए उनको नमन किया है तब, मुझे उन सभी वीर शहीद आत्माओं का आशीर्वाद मिलेगा, जो मुझे देश की सेवा करने की और अधिक ताकत देगा। त्याग तपस्या में कोई कमी न रहे, इसके लिए उनका जीवन, हम जैसे नागरिकों के लिए भी प्रेरक है। आप लोग मातृभूमि के लिए अपना घर-बार-गाँव, यार-दोस्त-परिवार छोड़ कर के उन कठिन क्षेत्रों में काम करते हैं, जिस कठिनाई का अंदाज़ सामान्य जीवन जीने वाले नागरिकों को होना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन आप ये जो साधना करते हैं, जो तपस्या करते हैं, उसी की बदौलत देश के कोटि कोटि नागरिक सुख-चैन की ज़िंदगी जी सकते हैं। कोटि कोटि जनों के आशीर्वाद आपके साथ हैं, और जब कोटि कोटि जनों के आशीर्वाद आपके साथ हैं, तो आपकी रक्षा जो कोटि-कोटि जनों के आशीर्वाद से बना रहता है। इस से बड़ा कोई रक्षा-कवच नहीं हो सकता है।

मैं इस मत का हूँ कि अगर देश विकास करना चाहता है, देश अगर प्रगति करना चाहता है, तो देश में सुख, शांति, सद्भावना, भाईचारा, ये अनिवार्य होता है, और उसी की नींव पर देश विकास की नयी उँचाइयों को पाता रहता है। ये सुख शांति तब तक प्राप्त नहीं होती है, जब तक हम हमारी सीमाओं को सुरक्षित न करें, हमारे सुरक्षा बलों को समर्थ न करें, हमारे सुरक्षा बलों को आधुनिक न करें, तब तक ये संभव नहीं होगा और राष्ट्र के विकास के लिए भी सुरक्षा का क्षेत्र सबसे ज्यादा सशक्त होना, समय की माँग है।

मैं सैन्य-बल के आधुनिकरण के पक्ष का हूँ। ना सिर्फ सैन्य-बल, सब प्रकार के सुरक्षा बलों के आधुनिकरण के पक्ष का हूँ। विज्ञान बहुत आगे बढ़ चुका है। टेक्नालजी बहुत आगे बढ़ चुकी है। अब शायद आने वाले नज़दीक के भविष्य में आमने-सामने लड़ाई के कुछ अवसर ही रहने वाले हैं। बहुत बड़ा बदलाव आने वाला है। और तब जाकर के सेना को आधुनिक बनाना, वैज्ञानिक बनाना, टेक्नालजी से सू-सज्ज बनाना, यह समय की माँग है, और हमारी यह प्राथमिकता रही है। आज देखिए हमारी कठिनाई कैसी है, कि सेना के जवानों के लिए जितना खर्च करना चाहिए, सुरक्षा बलों के लिए जितना खर्च करना चाहिए, उससे काफी ज्यादा हमारा बजट, हमारे सुरक्षा के संसाधनों को import करने में जाता है। अगर हम defence offset में आत्म-निर्भर होते हैं, सेना के लिए आवश्यक आधुनिक से आधुनिक प्रकार के शस्त्र हम अपने यहाँ उत्पादित करते हैं तो बजट का काफी हिस्सा, जो आज विदेशों में जा रहा है, वो हमारे सैन्य-बल के लोगों के कल्याण के लिए खर्च किया जा सकता है। अगर हम शस्त्र-अस्त्रों का उत्पादन अपने देश में करने पर बल दें, तो हमारे देश के नौजवानों को रोज़गार उपलब्ध होता है, और जो देश शस्त्र-अस्त्र उत्पादन करने की क्षमता रखता है, वो सेना के जवानों के साथ-साथ उस देश के नागरिकों का मनोबल भी बहुत ऊँचा होता है। उनको विश्वास होता है कि मेरी सेना के जवानों के हाथ खाली नहीं हैं, उनकी भुजाओं में सामर्थ्यवान अस्त्र-शस्त्र भरे पड़े हैं। जो उसके दिल दिमाग में जुझारूपन है और दिल दिमाग के जुझारूपन के साथ अस्त्र-शस्त्र का बल अनिवार्य है, और इसलिए, भारत को आत्म-रक्षा के लिए शस्त्र-अस्त्र के उत्पादन में आत्म-निर्भर होना बहुत आवश्यक है। आत्म-निर्भर व्यक्ति ही जैसे आत्म-गौरव से जी सकता है, वैसे आत्म निर्भर देश भी आत्म-गौरव के साथ विश्व के सामने सर ऊँचा करके जी सकता है।

बदले हुए कालखण्ड में पूरा विश्व भारत की तरफ बड़ी आशा के साथ से देख रहा है। विश्व भी, जो शांति की तलाश में है, उसे भी लगता है की भारत एक catalytic agent के रूप में एक बहुत बड़ी भूमिका अदा कर सकता है।

विश्व के सामर्थ्यवान देश आज भारत के साथ बराबरी के साथ बात करने के लिए उत्सुक हैं। ये तभी संभव हुआ है के हम सामर्थ के साथ खड़े हैं।

मेरे नौजवान साथियो, आपकी ये तपस्या कभी बेकार नहीं जाएगी। आपका कल्याण, आपके परिवारजनों का कल्याण,

आपकी संतानों का उज्ज्वल भविष्य, ये भारत की सामूहिक ज़िम्मेवारी है, और मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ क्योंकि मेरी सरकार इस विषय में प्रतिबद्ध है, और सेना के जवान के परिवार की चिंता अगर देश करता है, तो जवान हंसते-हंसते देश की चिंता करता है. इस मंत्र को मैं भली भाँति समझता हूँ, और इसलिए, वन्दे-मातरम का मंत्र लेकर के, देश की आज़ादी के लिए कितने लोगों ने जीवन दे दिया ।

आज , हर दो कदम पर जय हिंद- जय हिंद- जय हिंद सुनाई देता है । एक जवान दूसरे जवान को मिलता है तो जय हिंद कह करके गीट करता है । ये जय हिंद करने के लिए सीमा पर जवान, देश में किसान, 65% नौजवान - गाओं हो, खेत हो, खलिहान हो, शहर हो, सीमा हो - हर कोने पर ये “जय हिंद” का नारा, ये “भारत माँ की जय” की ललकार, हमें देश को आगे बढ़ाने की ताकत दे । हम देश को और नयी उँचाइयों पर ले जायें । सवा सौ करोड़ देशवासियों के सपनों को पूरा करने का संकल्प लेकर के हम आगे बढ़ें । और उन संकल्पों की सुरक्षा भी आपके हाथों में है । मुझे विश्वास है, सवा सौ करोड़ देशवासियों को विश्वास है, के देश को कभी दुनिया की कोई ताकत आपके रहते हुए ना झुका सकती है, ना कभी उसे पराजित कर सकती है । ये विजय का विश्वास लेकर के निकले हुए आप लोग कभी पराजित हो नहीं सकते, और जहाँ विजयश्री का मंत्र होता है, वहाँ ईश्वर का भी आशीर्वाद रहते हैं, और कभी हम अकेले नहीं होते । दूर-दूर पहाड़ी-नदी में कभी आप अकेले सेना के साथ अपनी ज़िम्मेदारी अगर निभा रहे हो, दूर-दूर चले गए हों आपके अगल-बगल में कोई दिखता नहीं होगा, लेकिन आप विश्वास करना कि आप अकेले नहीं होंगे, एक प्लस-वन आपके साथ होगा, वो ईश्वरीय शक्ति आपके साथ होती है हर पल होती है, क्यों? इसलिए की आप नि-स्वार्थ भाव से पवित्र कार्य करने के लिए चल पड़े हैं और जो नि-स्वार्थ भाव से पवित्र कार्य करता है, उसके ईश्वर हमेशा साथ रहता है । और जिसके साथ ईश्वर रहता है, वहाँ पराजय की कभी संभावना नहीं होती । वहाँ सिर्फ़ जै ही जै लिखा हुआ होता है । और वही जै अल्टिमेटली जय -हिंद का मंत्र बन जाता है । ये जय हिन्द का मंत्र हम सबको देश को आगे ले जाने की प्रेरणा देता है ।

मैं आज, आप सभी जवानों को मेरी तरफ से बहुत बहुत शुभकामनायें देता हूँ, और मैं आपको विश्वास देता हूँ की चाहे सरकार हो या समाज हो, पूरा देश आपके साथ खड़ा है । जैसा अभी बताया गया, देश के जवान कई सालों से प्रतीक्षा कर रहे थे, की आज़ाद हिन्दुस्तान में एक हमारा नैशनल वॉर म्यूज़ियम बनाना चाहिए, नैशनल वॉर मेमोरियल बनाना चाहिए । मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, और वैसे भी, मैं जबसे शासकीय व्यवस्था में आया हूँ, जब कभी गुजरात का मुख्यमंत्री रहा, या अभी प्रधानमंत्री बना, मेरी अनुभव रहा है कि जो अच्छे-अच्छे काम हैं, वो मेरे लिए बाकि रह गये हैं । वो सारे अच्छे-अच्छे काम मुझे ही करने हैं, और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ की जो सौभाग्य मुझे मिला है, वो सौभाग्य मैं पूरा करके रहूँगा और सम्मान प्राप्त हों। देश की आम इंसान को गौरव हो इसके लिए आवश्यक सारे कदम उठाऊँगा। मैं फिर एक बार, आप सबको बहुत बहुत शुभ-कामनायें देता हूँ और आपकी रक्षा राष्ट्र की रक्षा के लिए बहुत अनिवार्य है, इस बात को समझते हुए, आपको हर प्रकार से सज्ज करनी, ये शासन का दायित्व है । त्याग और तपस्या की आपकी भावना बहुत उँची होने के बावजूद भी आपकी रक्षा करने की भावना भी शासन के लिए सर्वोपरि रहनी चाहिए, इस मंत्र को लेकर के हम काम करते हैं । फिर एक बार, आपके बीच आने का मुझे अवसर मिला, आपसे मिलने का अवसर मिला - मैं आप सबका बहुत बहुत शुक्रगुज़ार हूँ, और आप सबको बहुत बहुत शुभकामनायें देता हूँ ।

जय हिंद ।

अमित कुमार / शिशिर चौरसिया, रजनी, तारा, प्रजापति

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

20-अगस्त-2014 20:48 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा डीआरडीओ के पुरस्कार समारोह में दिए गये भाषण का मूल पाठ

डॉ अविनाश जी, डॉ मालकोंडैया जी और उपस्थित सभी महानुभाव, आज उपस्थित सभी जिन महानुभावों को सम्मानित करने का मुझे सौभाग्य मिला है, उन सब का मैं हृदय से अभिनंदन करता हूँ, बधाई देता हूँ। उनका क्षेत्र ऐसा है कि वे न तो प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सकते हैं, और न ही दुनिया को यह बता सकते हैं कि वे क्या रिसर्च कर रहे हैं और रिसर्च पूरी हो जाने के बाद भी, उन्हें दुनिया के सामने अपनी बात खुले रूप से रखने का अधिकार नहीं होता। यह अपने आप में बड़ा कठिन काम है। लेकिन यह तब संभव होता है, जब कोई ऋषि मन से इस कार्य से जुड़ता है। हमारे देश में हजारों सालों पहले वेदों की रचना हुई और यह आज भी मानव जाति को प्रेरणा देते हैं। लेकिन किसको पता है कि वेदों की रचना किसने की? वे ऋषि भी तो वैज्ञानिक थे, वैज्ञानिक तरीके से समाज जीवन का दर्शन करते थे, दिशा देते थे। वैज्ञानिकों का भी वैसा ही योगदान है। वे एक लेबोरेटरी में तपस्या करते हैं। अपने परिवार तक की देखभाल भूल कर, अपने आप को समर्पित कर देते हैं। और तब जाकर मानव कल्याण के लिए कुछ चीज दुनिया के सामने प्रस्तुत होती है। ऐसी तपस्या करने वाले और देश की ताकत को बढ़ावा देने वाले, मानव की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्प रखने वाले - ये सभी वैज्ञानिक अभिनंदन के बहुत-बहुत अधिकारी हैं।

बहुत तेजी से दुनिया बदल रही है। युद्ध के रूप-रंग बदल चुके हैं, रक्षा और संहार के सभी पैरामीटर बदल चुके हैं। टेक्नोलॉजी जैसे जीवन के हर क्षेत्र को प्री-डोमिनंटली ड्राइव कर रही है, पूरी तरह जीवन के हर क्षेत्र में बदल रही है - वैसे ही सुरक्षा के क्षेत्र में भी है और गति इतनी तेज है कि हम एक विषय पर काँसेपचुलाइज़ करते हैं, तो उससे पहले ही दो-कदम आगे कोई प्रॉडक्ट निकल आता है और हम पीछे-के-पीछे रह जाते हैं। इसलिए भारत के सामने सबसे बड़ा चैलेंज जो मैं देख रहा हूँ, वो यह है कि हम समय से पहले काम कैसे करें? अगर दुनिया 2020 में इन आयुद्धों को लेकर आने वाली है, तो क्या हम 2018 में उसके लिए पूरा प्रबंध करके मैदान में आ सकते हैं? विश्व में हमारी स्वीकृति, हमारी मांग, 'किसी ने किया, इसलिए हम करेंगे' उस में नहीं है। हम विजुलाइज़ करें कि जगत ऐसे जाने वाला है और हम इस प्रकार से चलें, तो हो सकता है कि हम लीडर बन जाए और डीआरडीओ को स्थिति को रेस्पॉंड करना होगा, डीआरडीओ ने प्रो-एक्टिव होकर एजेंडा सेट करना है। हमें ग्लोबल कम्युनिटी के लिए एजेंडा सेट करना है। ऐसा नहीं है कि हमारे पास टेलेंट नहीं है, या हमारे पास रिसोर्स नहीं है। लेकिन हमने इस पर ध्यान नहीं दिया है क्योंकि हमारे स्वभाव में 'अरे चलो चलता है क्या तकलीफ है', ये एटीट्यूड है।

दूसरा जो मुझे लगता है, डीआरडीओ का कंट्रीब्यूशन कम नहीं है। इसका कंट्रीब्यूशन बहुत महत्वपूर्ण है और इसे जितनी बधाई दी जाए, वह कम है। आज इस क्षेत्र में लगे हुए छोटे-मोटे हर व्यक्ति अभिनंदन के अधिकारी है। लेकिन कभी उन्हें वैज्ञानिक तरीके से भी सोचने की आवश्यकता है। अभी मैं अविनाश जी से चर्चा कर रहा था। डीआरडीओ और डीआरडीओ से जुड़े हुए प्राइवेट इंडिविजुअल और कंपनीज़, इनको तो हम अवॉर्ड दे रहे हैं और अच्छा भी है, लेकिन भविष्य के लिए मुझे लगता है आवश्यकता है कि डीआरडीओ एक दूसरी कैटेगिरी के अवार्ड की व्यवस्था करे, जिसका डीआरडीओ से कोई लेना देना नहीं होगा। जिसने डीआरडीओ के साथ कभी कोई काम नहीं किया है, लेकिन इस फील्ड में रिसर्च करने में उन्होंने कोई दूसरा कंट्रीब्यूशन किया है, किसी प्रोफेसर के रूप में, आईटी के क्षेत्र में। ऐसे लोगों को भी खोजा जाए, परखा जाए तो हमें एक टेलेंट जो आउट ऑफ डीआरडीओ है उनका भी पूल बनाने की हमें संभावना खोजनी चाहिए और इसलिए हमें उस दिशा में सोचना चाहिए।

तीसरा मेरा एक आग्रह है कि हम कितने ही रिसर्च क्यों न करें, लेकिन आखिरकार चाहे जल सेना हो, थल सेना हो, या नौसेना हो सबसे पहले नाता सैनिक का है, क्योंकि उसी से उसका गुजारा होता है और ऑपरेट भी उसी को करना है। लेकिन सेना के जवान और अफसर जो रोजमर्रा की उस जिंदगी को जीते हैं, काम करते वक्त उसके मन में भी बड़े इनोवेटिव आइडियाज आते हैं। जब वो किसी चीज को उपयोग करता है तो उसे लगता है कि इसकी बजाय ऐसा होता तो अच्छा होता। उसको लगता है कि लेफ्ट साइड दरवाजा खुलता है तो राइट साइड होता तो और अच्छा होता। यह कोई बहुत बड़ा रॉकेट साइंस नहीं होगा। क्या हम कभी हमारे तीनों बलों को, जल सेना, थल सेना और नौसेना उनमें से भी जो आज सेवा में रत है, उनको कहा जाए कि आप में कोई इनोवेटिव आइडियाज होंगे तो उनको भी शामिल किया जाएगा। आप जैसे अपना काम करते हैं। जैसे एजुकेशन में बदलाव कैसे आ रहा है। एक टीचर जो अच्छे प्रयोगकर्ता है, उनके आगे चलकर

आइडियाज, इंस्टीट्यूशन में बदल कर आने वाली पीढ़ियों के लिए काम आता है। वैसे ही सेना में काम करने वाले टेक्निकल पर्सन और सेवा में रत लोग हैं। हो सकता है पहाड़ में चलने वाली गाड़ी रेगिस्तान में न चले तो उसके कुछ आइडियाज होंगे। हमें इसको प्रमोट करना चाहिए और एक एक्सटेंशन ऑफ डीआरडीओ टाइप, हमें इवोल्व करना चाहिए। अगर यह हम इवोल्व करते हैं तो हमारे तीनों क्षेत्रों में काम करने वाले इस प्रकार के टैलेंट वाले जो फौजी हैं, अफसर हैं मैं मानता हूँ, वे हमें ज्यादा प्रैक्टिकल सोल्यूशन दे सकते हैं या हमें वो स्पेसिफिक रिसर्च करने के लिए वो आइडिया दे सकते हैं कि इस समस्या का समाधान डीआरडीओ कर सकता है। उस पर हमें सोचना चाहिए।

चौथा, जो मुझे लगता है - कि हम डीआरडीओ के माध्यम से समाज में किस प्रकार से देशभर में इस क्षेत्र में रुचि रखने वाली अच्छे विश्वविद्यालयों की पहचान करें, और एक साल के लिए विशेष रूप से इन साइंटिस्टों को उन विश्वविद्यालयों के साथ अटैच करें? उन विश्वविद्यालयों के छात्रों के साथ डायलॉग हों, मिलना-जुलना हो, साल में सात आठ सिटिंग हों। तो वहाँ जो हमारे नौजवान हैं उनके लिए साइंटिस्ट एक बहुत बड़ी इंस्पिरेशन बन जाएगा। जो सोचता था कि मैं अपना करियर यह बनाऊंगा, वो सोचता है कि इन्होंने अपना जीवन खपा दिया, चलो मैं भी अपने कैरियर के सपने छोड़ दूँ और इसमें अपना जीवन खपा दूँ तो, हो सकता है वो देश को कुछ देकर जाए।

यही हमारा काम है संस्कार-संक्रमण का कि एक जनरेशन से दूसरी जनरेशन, हमारे इस सामर्थ को कैसे परकोलेट भी करे और डिवेलप भी करें और जब तक हम मैकेनिज्म नहीं बनाएंगे ये संभव नहीं है। यूनिवर्सिटी में हम कन्वोकेशन में किसी साइंटिस्ट को बुला लें वो एक बात है, लेकिन हम उनके टैलेंट, उनकी तपस्या और उनके योगदान को किस प्रकार से उनके साथ जोड़ें वो आपके बहुत काम आएगा।

क्या इन साइंटिस्टों को सेना के लोगों के साथ इन्टरैक्शन करने का मौका मिलता है ? क्योंकि इन्होंने इतनी बड़ी रिसर्च की है। सेना के जवान को मिलने से रक्षा का विश्वास पैदा होता है। क्या कभी सेना के जवान ने उस ऋषि को देखा है, जिसने उसकी रक्षा के लिए 15 साल लेबोरेटरी में जिंदगी गुजारी है। जिस दिन सेना में काम करने वाला व्यक्ति उस ऋषि को और उस साइंटिस्ट को देखेगा, आप कल्पना कर सकते हैं उस ऑनर का फल कैसा होगा और इसलिए हमारी पूरी व्यवस्था एक दायरे से बाहर निकाल करके जिस में ह्यूमन टच हो, एक इंस्पिरेशन हो, उस दिशा में उसको कैसे ले जा सके। मैं मानता हूँ कि अभी जिन लोगों का सम्मान हुआ, उनसे इंटरैक्ट करके देखें, आपको अनुभव होगा कि इस फंक्शन से उनका भी इंस्पिरेशन हाई हो जाएगा कि वो काम करने वाले को भी प्रेरणा देगा और जिसने उनके लिए काम किया है उन जवानों का भी इंस्पिरेशन हाई हो जाएगा कि अच्छा हमारे लिए इतना काम होता है। उसी प्रकार से डीआरडीओ को कुछ लेयर बनाने चाहिए ऐसा मुझे लगता है हालाँकि इसमें मेरा ज्यादा अध्ययन नहीं है पर एक तो है हाईटेक की तरफ जाना और बहुत बड़ा नया इनोवेशन करना है लेकिन एट द सेम टाइम रोजमर्रा की जिंदगी जीने वाला जो हमारा फौजी है, उसकी लाइफ में कम्फर्ट आए। ऐसे साधनों की खोज, उसका निर्माण यह एक ऐसा अवसर है। आज उसका वाटर बैग जो तीन सौ ग्राम का है तो उतना ही अच्छा बैग डेढ़ सौ ग्राम का कैसे बने, ताकि उसको वजन कम धोना पड़े। आज उसके जूते कितने वेट के हैं, पहाड़ों में एक तकलीफ रहती है, तो रेगिस्तान में दूसरी तकलीफ होती है, इसमें भी बहुत रिसर्च करना है। क्या इस दिशा में कभी रिसर्च होता ? क्या कभी जूते बनाने वाली कंपनी और डीआरडीओ के साथ इनका इन्टरफेस होता है। क्या ये रिसर्च करके देते हैं। ये लोग डीआरडीओ को एक लैब से बाहर निकल करके और जो उनकी रोजमर्रा की जिंदगी है। अब देखिए हम इतने इनोवेशन के साथ लोग आएंगे, इतनी नई चीजें देंगे। जो हमारी समय की सेना के जवानों के लिए बहुत ही कम्फर्टबल व्यवस्था उपलब्ध करा सकते हैं, बहुत लाभ कर सकता है। इस दिशा में क्या कुछ सोचा जा सकता है।

एक और विषय मेरे मन में आता है - आज डीआरडीओ के साथ करीब 50 लेबोरेट्री भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में काम कर रही हैं क्या हम तय कर सकते हैं कि मल्टी-टैलेंट का उपयोग करने वाली पांच लैब हम ढूँढें 50 में से और हम एक फैसला करेंगे कि 5 लैब ऐसी होंगी, जिसमें नीचे से ऊपर एक भी व्यक्ति 35 साल से ऊपर की उम्र का नहीं होगा। सब के सब विलो 35 होंगे। अल्टीमेट डिसिजन लेने वाले भी 35 साल से नीचे के होंगे। एक बार हिम्मत के साथ हिन्दुस्तान की यंगेस्ट टीम को हम अवसर दें, और उन्हें बतायें कि दुनिया आगे बढ़ रही है, आप बताओ। मैं विश्वास के साथ कहता हूँ कि इस देश के टैलेंट में दम है, वो हमें बहुत कुछ नई चीजें दे सकता है।

अब आजकल साइबर सिक्योरिटी की बहुत बड़ी लड़ाई है। मैं मानता हूँ कि वो 20-25 साल का नौजवान बहुत अच्छे ढंग से यह करके दे देगा हमें। क्योंकि उसका विकास इस दिशा में हुआ है, क्योंकि ये चीजें तुरंत उसके ध्यान में आती हैं। क्या हम पांच लैब टोटली डेडीकेटेड टू 35 ईयर्स बना सकते हैं? डिसिजन मैकिंग प्रोसेस आखिर तक 35 से नीचे के लोगों के हाथों में दे दी जाए। हम रिस्क ले लेंगे। हमने बहुत रिस्क लिए हैं। एक रिस्क और ले लेंगे। आप देखिए एक नई हवा की जरूरत है। एक फ्रेश एयर की जरूरत है। और फ्रेश एयर आएगी। हमें लाभ होगा।

डिफेंस सिक्योरिटी को लेकर हमें हमारे सामान्य स्टुडेंट्स को भी तैयार करना चाहिए। क्या कभी हमने सरकार के द्वारा, स्कूलों के द्वारा किए गये साइन्स फेयर में कहा है, कि यह साइन्स फेयर 2015 विल बी टोटली डेडीकेटेड टू डिफेंस रिलेटेड इश्यू? सब नौजवान खोजेंगे, टीचर इन्ट्रेस्ट लेंगे, स्टडीज होंगी, प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनेंगे। लाखों की तादात में हमारे स्टुडेंट्स की इन्वाल्वमेंट, डिफेंस टेक्नोलॉजी एक बहुत बड़ा काम है, डिफेंस रिसर्च बहुत बड़ा काम है, यह सोचने की खिड़की खुल जाएगी। हो सकता है दो-चार लोग ऐसे भी निकल आएँ जिनको मन कर जाए की चलो इसको हम करियर बनायें अपना। हमने देखा है कि आजकल टेक्निकल यूनिवर्सिटीज की एक ग्लोबल रॉबोट ओलंपिक होता है। राष्ट्र स्तर का भी होता है। क्या हम उसको स्पेशली डीआरडीओ से लिंक करके रॉबोट कंपिटिशन टोटली डेडीकेटेड टू डिफेंस बना सकते हैं?

अब देखिए ये जो नौजवान रॉबोट के द्वारा फुटबाल खेलते हैं, रॉबोट के द्वारा क्रिकेट खेलते हैं, वो सब उसमें मज़ा भी लेते हैं, और उसका कॉम्पिटिशन भी होता है। लेकिन उसको 2-3 स्टेप आगे हम सोच सकते हैं। एक नये तरीके से, नयी सोच के साथ, और सभी लोगों को जोड़ कर के हम इस पूरी व्यवस्था को विकसित करें और साथ साथ, समय की माँग है, दुनिया हमारा इंतज़ार नहीं करेगी। हमें ही समय से पहले दौड़ना पड़ेगा और इसलिए, हम जो भी सोचें, जो भी करें, जी-जान से जुट कर के समय से पहले करने का संकल्प करें। वरना कोई प्रॉजेक्ट कन्सीव हुआ 1992 में, और 2014 में "हा, अभी थोड़े दिन लगेंगे" की हालत में होगा, तो ये दुनिया बहुत आगे बढ़ जाएगी।

इसलिए, आज डीआरडीओ से संबंधित सभी प्रमुख लोगों से मिलने का मुझे अवसर मिला है, जो इतना उत्तम काम करते हैं, और जिनमें पोटेन्शियल है। लोग कहते हैं कि मोदी जी आपकी सरकार से लोगों को बहुत अपेक्षायें हैं। जो करेगा उसी से तो अपेक्षा होती है, जो नहीं करेगा उस से कौन अपेक्षा करेगा? तो डीआरडीओ से भी मेरी अपेक्षा क्यों है? मेरी अपेक्षा इसलिए है, क्योंकि डीआरडीओ में करने का सामर्थ्य है, ये मैं भली-भाँति अनुभव करता हूँ। आपके अंदर वो सामर्थ्य है और आपने कर के दिखाया है और इसलिए मुझे विश्वास है कि आप लोग यह कर सकते हैं।

फिर एक बार सभी वैज्ञानिक महोदयों को देश की सेवा करने के लिए उत्तम योगदान करने के लिए, बहुत बहुत शुभकामनायें देता हूँ, बहुत बधाई देता हूँ। धन्यवाद।

अमित कुमार / सुरेंद्र शर्मा / सुजीत / लक्ष्मी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

23-अक्टूबर-2014 12:46 IST

सियाचिन बेस कैंप में भारतीय सेना के अधिकारियों और जवानों को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गये संबोधन का मूल पाठ

प्यारे जवानों

आप सबको बड़ा सरप्राइज हुआ होगा कि मैं आज आपको बिना बताए आपका मेहमान बन गया। लेकिन मुझे लगता है कि मैं अपनों के बीच मेहमान कैसे बन सकता हूँ और इसलिए मेरी इच्छा थी कि बिना बताए ही आपके बीच आ जाऊँ। आप यहां परिवार से दूर, देश के लोग आनंद और उत्साह के साथ दिवाली मना सके, इसलिए इन बर्फीली पहाड़ियों के बीच, ये श्वेत चादर के बीच, जहां न कोई दीया जलाने की संभावना है, ऐसी दुर्गम परिस्थिति में अपने आप को खपा रहे हैं। अपनी जिंदगी देशवासियों की खुशी के लिए आप न्यौछावर कर रहे हैं। अपनी जवानी, भारत की जवानी गर्व कर सके, इसलिए आप हर पल, एक ही मंत्र को लेके, एक ही सपना लेकर के, एक ही संकल्प लेकर के, और वो है भारत माता की जय। यहां आपकी प्रेरणा, यही आपकी जिंदगी।

मैं समझता हूँ, सभी देशवासियों के लिए आपके प्रति जो गौरव का मान है, उसका मूल कारण हर पल, हर परिस्थिति में देश के लिए जीना, देश के लिए मरना, यह आपका जीवन संदेश रहा है। इसलिए थलसेना हो, वायुसेना हो, नौसेना हो, देश के जवानों के प्रति सारा देश गर्व की अनुभूति करता है।

दुनिया का यह दुर्गम से दुर्गम क्षेत्र है, जहां भारत के जवान तैनात हैं। विश्व में कहीं भी पर इनकी कठिनाइयों वाला क्षेत्र नहीं है। विश्व में कहीं भी माइनस 30, माइनस 40 डिग्री temperature में मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने आप को तैनात रखने का सौभाग्य विश्व को किसी को नहीं मिला है और आपने इसे उजागर करके दिखाया है।

मैं विशेष रूप से आया हूँ, आपके बीच दिवाली के इस पावन पर्व पर, आपके बीच शरीक होने के लिए। मैं जानता हूँ, कि परिवार के बीच दिवाली मनाने को जो आनन्द होता है, वह कुछ और होता है। लेकिन, आप तो भारत माता की भक्ति में ऐसे खप गये हैं, कि परिवार कहीं और दिवाली मना रहा है, आप कहीं और मातृभूमि की रक्षा में तैनात हैं। मेरे यहां आने से आपके परिवार की कमी में भर नहीं सकता हूँ, वह कमी तो रहनी ही रहनी है, लेकिन सवा सौ करोड़ देशवासियों के प्रतिनिधि के रूप में, आपके बीच आ करके, मैं स्वयं गौरव अनुभव करता हूँ। एक संतोष का भाव अनुभव करता हूँ।

प्रधानमंत्री के रूप में मेरे लिए यह पहली दिवाली है। और पहली दिवाली को और अभी-अभी तो मैं चुनाव भी जीता हूँ तो एक और भी तो उसमें जरा उमंग-उत्साह भरा हुआ है। इन सबको छोड़-छाड़ कर के मैंने दिवाली कुछ समय आपके साथ और कुछ समय श्रीनगर के बाढ़ पीड़ितों के बीच बिताने का तय किया है।

अभी जब श्रीनगर में बाढ़ भाई, जिस प्रकार से हमारे सेना के जवानों ने मानवता की ऊंचाई दिखाई है, हमारे कुछ जवानों को अपना जीवन देना पड़ा, उनकी जिंदगी बचाने के लिए और यही तो सबसे बड़ी मिसाल है। जो हमारे जवानों ने दिखायी है। आज भारत चैन से सोता है, क्योंकि आप दिन रात जगते हैं। वो सुख-शांति की जिंदगी जीता है, क्योंकि आप कष्ट झेलते हैं।

भाइयों-बहनों, अब तो सेना में भले ही कम मात्रा में, लेकिन महिलाओं ने भी अपना शौर्य-अपना सामर्थ्य दिखाना प्रारंभ किया है। यह हमें गौरव प्रदान करता है। सेना के जवानों के बीच आकर के मैं गर्व महसूस करता हूँ। आप कल्पना कर सकते हैं कि सियाचिन में, इन बर्फीली पहाड़ियों में, कितने कितने हमारे नौजवान शहीद हो चुके हैं। सफ़ेद चट्टान ओढ़कर के सौ गए और किसी का शरीर 21 साल के बाद मिलता है। पता नहीं, कितने ही ऐसे जीवन होंगे, जिनका अभी भी परिवार वालों को इंतजार होगा।

आजादी के लिए फांसी के तख्त पर चढ़ने वाले लोग इतिहास में अमर हो जाते हैं। ये आजादी के लिए जिए, मरे और आजादी के लिए मरे। और, आप वे लोग हैं , जो देश आजाद रहे, देश का सामान्य मानव सुख-चैन की जिंदगी जिये,

इसलिए अपने आप को अर्पित करने के लिए प्रति पल संकल्पबद्ध रहते हैं।

ये बलिदान कम नहीं है। ये त्याग, ये तपस्चर्या, ये Discipline हमें गर्व दिलाती है, देश को गर्व दिलाती है। विश्व के अनेक फौज के अंदर भारत के फौजियों का अपना एक सम्मान है, उनके जीवन और आचरण के कारण, डिसिप्लिन के कारण, सामान्य मानवों के प्रति उनके व्यवहार के कारण और संकट के समय उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर करके उनके सुख-दुख को बांटना।

भारत की फौज सिर्फ दुश्मनों के लिए खतरा बनकर जीने वाली फौज नहीं है, वह दुश्मनों के लिए जितना संकट पैदा करती है, उतना ही अपनों के लिए जीवन प्रदान करती है। कोई भी ऐसा प्राकृतिक संकट नहीं आया है, जिसमें हमारी सेना के जवान पहुंचे ना हों। दिन-रात मेहनत ना किये हों। भारत आपके प्रति गौरव का अनुभव करता है। जब तक कोई इन बर्फीले ग्लेशियर को नहीं देखेगा, माइनस 30-40 डिग्री में जवान कैसे तैनात होता है, इसे देखेगा नहीं, उसे कल्पना नहीं आ सकती है कि हमारे फौज, हमारे हवान कितनी कठिनाइयों के बीच, कितने दुर्गम इलाकों के बीच, मातृभूमि की रक्षा के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं।

मेरा एक सौभाग्य है आज कि भारत के एक प्रधान सेवक के रूप में मुझे आपके हालात को अपनी आंखों से देखने का अवसर मिला है। अनुभव करने का अवसर मिला है। मैं इन ऊंचाईयों पर जब पहुंचा तो हमारे साथ वाले डॉक्टर हर पल मुझे देख रहे थे। मेरा बीपी चैक कर रहे थे मेरा, oxygen चेक कर रहे थे। उसी से पता चलता है कि कितनी गंभीर अवस्था में आप लोग रहते हैं, कितनी कठिनाइयों में आप रहते हैं।

मैं विश्वास दिलाता हूं मेरे देश के जवानों को, चाहे वो सीमा पर तैनात हों या कैंटोनमेंट में हो, वो सेवारत हो या सेवानिवृत्त हों, सवा सौ करोड़ का देश आपके साथ खड़ा हुआ है। आपके सपने, आपकी जिम्मेवारी, ये देश के सपने और देश की जिम्मेवारी है। यहां से निकलने के बाद कभी आपको किसी चीज के लिए किसी पर निर्भर रहना पड़े, ये मुझे मंजूर नहीं है। सेना के जीवन के बाद भी आप और आपका परिवार गौरव से जिये, सम्मान से जिये, ऐसी व्यवस्था हमेशा रहे, ये मेरी प्रतिबद्धता है, ये मेरी इच्छा है।

One Rank-One Pension, कितने दशक बीत गए, ये सपना आपका पूरा करना मेरे ही भाग्य में लिखा हुआ है। इसलिए, और मेरा लगाव भी है, आप लोगों के साथ मेरा लगाव भी है। हमारे जवानों के लिए एक हमेशा emotional विषय रहा है कि एक National level का war Memorial क्यों ना हो? मेरे साथियों, विश्व में हम गर्व कर सकें, ऐसा war memorial बनाने का हमने निर्णय ले लिया है, budget में उसका allocation कर दिया है, काम उसका चल रहा है, उसकी डिजाइन-विजाइन के लिए बहुत तेज गति से काम चल रहा है। इसलिए देश के लिए जीने-मरने वाले फौजी के लिए उमंग और जो उत्साह होता है, उसकी जो प्रेरणा होती है, उसकी चिंता करना पूरे देश की जिम्मेदारी है, शासन की जिम्मेदारी है। इसे निभाने के लिए मैं संकल्पबद्ध हूं।

मैं देशवासियों को भी इस ऊंचाई से दीपावली की आज में शुभकामनाएं दे रहा हूं। शायद ऐसा पहले कभी नहीं हुआ होगा। मैं उन चोटियों तक हो आया हूं, जहां माइनस 30 डिग्री temperature रहता है। जहां हमारे जवान तैनात हैं। मैं इस ऊंचाई से भारतवासियों को, भारत के साथ जीने-मरने वाले जवानों के साथ खड़ा रह कर एक विशिष्ट रूप में दीपावली की शुभकामनाएं देता हूं। मैं विश्वास करता हूं कि आप जो दिवाली की दीया जला रहे हैं, उस रोशनी के मूल में हमारे इन जवानों का पसीना भी है, उनका त्याग भी है, तपस्या भी है। इसलिए दिवाली के इस पावन पर्व पर हम भी हमारी रक्षा करने वाले हमारा दीया कभी बुझ न जाए। इसमें जिदंगी खपाने वाले उन जवानों का स्मरण करते रहे, उनका गौरव करते रहें। एक स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में हम भी, जवान अगर सीमा की रक्षा करता है तो नागरिक सामान्य मानव के सपनों की चिंता करे और ये दोनों का साथ-साथ चलना ही राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की गारंटी होती है।

मैं फिर एक बार आप सबको दिवाली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। आपके बीच आने का मुझे अवसर मिला, ऐसी दुर्गम जगह पर आने का अवसर मिला, ये मेरा सौभाग्य रहा है। मैं आपका हूं, मैं आपके लिए हूं, आपके बीच हूं, प्रतिपल आपके साथ हूं, ये विश्वास दिलाने आया हूं और हम सब मिलकर के मां भारती की सेवा में लगे हैं और अच्छी भारत मां की सेवा करेंगे। इस विश्वास को आगे बढ़ाते चलेंगे, इसी भावना के साथ फिर एक बार आपको भी और इन दुर्गम पहाड़ियों से देशवासियों को भी मेरी दीपावली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

विश्वभर में फैले हुए भारतीय समाज को भी दीपावली की मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

बहुत बहुत धन्यवाद। भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय।

अमित कुमार/ शिशिर चौरसिया, तारा, मधुप्रभा